

प्रश्न 1.

हमारे जैसे बहु कोशी जीवों में आवंसीजन की आवश्यकता पूरी करने में विश्लेषण क्यों आपयाप्त है?

उत्तर

बहु कोशी जीवों में शारीर में समस्त कोशी काँड़े वाहावरण की रसायनिक सम्पर्क में नहीं होती, इसलिए विश्लेषण बहु कोशी की जीवों में आवंसीजन की कमी को पूरा नहीं करता है।

प्रश्न 2.

कोई वस्तु अजीव है, इसका निष्पारिण करने के लिए उस किसी मापदण्ड का उपयोग करेगी?

उत्तर

सभी जीवों के हारा अपने शारीर का सरमामत एवं स्परस्यात् करने की क्षमता ही है। इसमें अपनेक पृष्ठार की जीवक्रियाएँ जैसे → वृत्तस्न, पाचन, उत्सर्जन, पूजनन, वात आदि हीनचाही

प्रश्न 3.

किसी जीव हारा फिज कुचली सामग्रियों का उपयोग किसा जाता है?

उत्तर

निम्न सामग्रियों का उपयोग किसा जाता है —

भौजन → यह कोशी काँड़ों की झज्जी प्रदान करता है।
आवंसीजन → यह भौज्य पदार्थ का आवश्यकरण करके झज्जी प्रदान करते हैं।

जल → यह अनक पृष्ठार की जीवक्रियाओं में सहायता करता है।

प्रश्न 4.

स्वपोषी पीषण तथा लिख्माषी पीषण में व्यापर है?

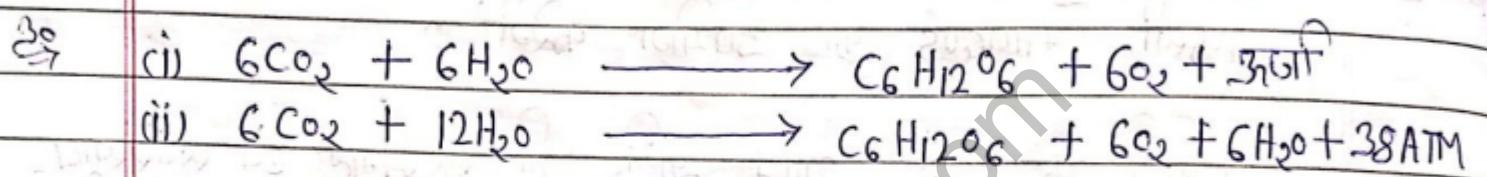
स्वपोषी पीषण → वे जीव जो अपने भौजन इंसान लानी हैं।
वे स्वपोषी पीषण कहलाते हैं।

जैसे → दे पीछे,

विषमपोषण पौष्ण \Rightarrow ऐसे जीव जो अपने भोजन के लिए द्वितीय जीवों पर निर्भर रहते हैं, विषमपोषणीय पौष्ण कहलाते हैं।

जैसे कि मकुर्य, अमरकेल, गाय, कीटभक्षी आदि।

प्रश्न 5. प्रकाश प्रांसलेषण के लिए आवश्यक कुछ चीज़ी सामग्री पौष्ण कहाँ से प्राप्त करता है।



काबिन डाई ग्यासेसाइड \Rightarrow यह पौष्ण वायुमण्डल से प्राप्त करते हैं।
 जल \Rightarrow इसे पौष्ण मृदा के हृत्रा ताप करता है।

प्रश्न 6. पानकु इन्जाइमों का कार्य क्या होता है?

उ॒ पानकु इन्जाइमों भोजन के जाटल अण्डों की सख्त अण्डों में विधायित कर देते हैं, जिससे यह भोज्य पदार्थ हृथि झोट हृत्रा अवश्याभत कर लिया जाता है।

जैसे \rightarrow (i) टाइलिन इन्जाइम, स्टार्च को सफुरा में बदल देता है।

(ii) ट्रैट्यन इन्जाइम, पूरी हृत को पैकटॉन में बदल देता है।

(iii) ऐनिन यह दुध को दृष्टि में बदलने का कार्य करता है।

(iv) लाइसिन इन्जाइम तस्वा की तस्वीय अम्लों में तैलने का कार्य करता है।

प्रश्न 7.

पचे दूर भोजन का अवश्योषण कुप्रित करने के लिए क्या सुनि -
फलपूरित किया जाता है?

उत्तर

पचे दूर भोजन का अवश्योषण क्षमता में होता है, क्षमता की सर्वनां इस प्रकार होती है कि फूल सहायी क्षेत्रफल आतिरिक्त बढ़ जाता है, जिससे अवश्योषण का दोष भी बढ़ जाता है। अतः पचा दूर भोजन आधिक मात्रा में अवश्योषण होने लगता है, जो रक्त के द्वारा सम्पूर्ण शरीर में पहुंच जाता है, क्षमता की आत्मीय वृद्धि पर बहुत बड़ी सरव्या में उत्तरायों के समान दोष देती है, जिसे रसायन कुप्रित है, इसी के द्वारा भोजन का अवश्योषण किया जाता है।

प्रश्न 8.

छवसन के लिए आंकसीजन प्राप्त करने की दिशा में एक जलीय जीव की अपेक्षा रसायनिक जीव किस प्रकार लाभपूर्ण है।

उत्तर

जलीय जीव जल में दूली हुई आंकसीजन की वृद्धण करता है। जल में आंकसीजन की अतिरिक्त कमी होती है। अतः जलीय जीवों में छवसन की दर आधिक होती है, जबकि रसायनिक वायुमण्डल में उपस्थित आंकसीजन की छवसन अग्री द्वारा वृद्धण करती है, जिससे प्रयाप्त आंकसीजन उपलब्ध होने के कारण छवसन की दर कम होती है, इसलिए जलीय जीवों की अपेक्षा रसायनिक जीवों में छवसन आधिक लाभपूर्ण है।

प्रश्न 9.

स्तनधारी तथा पक्षियों में आंकसीजनित तथा विआंकसीजनित स्थानीय की अलग करना क्यों आवश्यक है?

उत्तर

स्तनधारी पक्षियों की आधिक मात्रा में ऊजा की आवश्यकता होती है, जिससे इन्हें आंकसीजन की आधिक आवश्यकता होती है। शरीर में आंकसीजन की नियन्त्र पूरी के लिए रसनधारी तथा पक्षियों में आंकसीजनित एवं विआंकसीजनित आंकसीजन अलग - अलग रखना आवश्यक होता है।

प्रश्न 10. गुलूकीज के आकंखाजन से विभिन्न जीवों में ऊर्जा प्राप्त करने के विभिन्न पथ क्या हैं?

उत्तर: गुलूकीज के आकंखाकरण से ऊर्जा प्राप्त करने का पहला करण कीष्टों का दृश्य दीर्घ है। इसमें गुलूकीज से पायखपेट का निर्माण दीर्घ है, पायखपेट का द्वायाकंखाकरण विभिन्न जीवों में मिलन - मिलन हरीकों में दीर्घ है।

(i) अवायवीय छवरण \rightarrow यदि किसी आकंखाजन की अनुपस्थिति में होती है, जिसे इस्ट मॉफिष्टन के द्वारा पायखपेट ऐलोन एवं CO₂ में बदल जाता है,

(ii) वायवीय छवरण \rightarrow यदि किसी आकंखाजन की उपरिथिति में होती है, इस किसी के कल्प स्वप्न CO₂ तथा जल उत्पन्न दीर्घ है, तथा आधिक मात्रा में ऊर्जा मुक्त होती है।

(iii) आकंखाजन की कुमी \rightarrow जब हम अत्याधिक व्यायाम या मध्यरेते करते हैं, तब हमारे शरीर में आकंखाजन की कुमी दी जाती है, जिससे कीष्टिकुओं में लिपाटक अम्ल बनने लगता है, मासपेसीय में लिपाटक अम्ल बनने से फ्रूप होने लगता है।

प्रश्ना: मनुष्यों में आकंखाजन तथा काबिनिडॉ और्क्साइड का परिवहन कैसे होता है?

29

आकर्षीजन का परिवहन \rightarrow इवसन द्वारा घृण की गयी आकर्षीजन जब फेफड़ों की फूपि काम्यों की शिकायतों में पुढ़चरी है, तो यह रक्त में उपरिथर दीमोरलोबिन से क्रिया करके आकर्षीदीमोरलोबिन बना देती है। फेफड़ों से यह आकर्षीदीमोरलोबिन रक्त के द्वारा शरीर की कोशिकाओं तक पहुँच जाता है। कोशिकाओं में जाकर यह आकर्षीदीमोरलोबिन आकर्षीजन प्रीर दीमोरलोबिन में दृढ़ जाता है, और आकर्षीजन का उपयोग कर लेती है, और दीमोरलोबिन वापस फेफड़ों की कूपिकाओं में आ जाता है।

काबिनडाइप्राक्साइड का परिवहन \rightarrow CO_2 जल में अत्याधिक घुलनशील है। इसलिए इसका परिवहन कोशिकाओं से फेफड़ों तक प्लाज्मा के द्वारा होता है, इसके अलावा CO_2 का परिवहन कालीनिक गोर्गफ एवं बाटकालीनिक के रूप में भी होता है।

प्रश्न 12. गैसों के निमय के लिए मानव फुफुंस (फेफड़ों) में अधिक - तम हेत्रफल को कैसे आभि कलिप्त करता है।

30

फेफड़ों के अन्दर मार्ग में हीटी-हीटी नलिकाएँ पायी जाती हैं, जिसे श्वासानेय कुछते हैं, श्वासनीय विभाजित द्वाकर श्वासानेय काएँ बनाती हैं, श्वासनीय काम्यों का नालिम शराब शुल्करे के समान सर्चना बनाता है, जिसे कूपिकाएँ कुछते हैं, इन्हीं कूपिकाओं में गैसीय आदान-पूदान की क्रिया होती है, कूपिकाओं की अत्यन्त लघू पत्ती होती है, जिसमें अत्याधिक संख्या में रक्त लाइकाएँ पायी जाती हैं, इसी कारण कूपिकाओं का हेत्र गैसीय आदान-पूदान के लिए अत्याधिक विस्तृत हो जाता है, और उनमें गैसीय आदान पूदान सुविधा पूर्णके हो जाती है।

प्रश्न 13

मानव के बृहन तंत्र के छटक का नियम ? इन छटकों के कार्य क्या हैं ?

30

रक्त \Rightarrow रक्त एक लाल रंग का तरल संयोजी ऊरु है, जो निम्न मांगों से मिलकर बनता है।

- (i) प्लाज्मा (ii) लाल रक्त कृणकारे (iii) श्वेत रक्त कृणकारे (iv) थोर्सोसाइट

रक्त के निम्न कार्य हैं -

- (i) अटॉर्ड और कॉर्ड का परिवहन करता है।
- (ii) अटॉर्ड भौज्य पदार्थों का परिवहन करता है।
- (iii) अटॉर्ड उत्सज्जीव पदार्थों का परिवहन करता है।
- (iv) अटॉर्ड दारमान्स का परिवहन करता है।
- (v) अटॉर्ड ताप को नियंत्रित करता है।
- (vi) अटॉर्ड रसायनों का परिवहन करता है।
- (vii) अटॉर्ड शरीर को ऊर्जा साप्त करता है।

दूध \Rightarrow अटॉर्ड एक प्रमुख अंग का तरट काम करता है, जो ऊकर्सोजनित एवं विमाक्षीजनित स्थायिर का परिवहन करता है।

स्थायिर बाइकारे \Rightarrow अटॉर्ड एक जाल के रूप में होता है, जो शरीर में स्थायिर के परिवहन में सहायता करती है।

प्रश्न 14.

इच्छा संग्राहक पादप में बृहम् तंत्र के घटक क्या हैं ? पादपों में परिवहन तंत्र के घटक का नियन है।

31

जाइलम \Rightarrow अटॉर्ड बाइकारों एवं शारीरिकारों से मिलकर बनता है। अटॉर्ड जड़ों के द्वारा ग्राहणशाखाएँ जल एवं रस निज लवणों को पोषण के लिए लाने वाला तक पहुँचाने का कार्य करता है।

प्र० पलोएम \Rightarrow यदि चालना कीशकारे खं सद्यर कोशिकाओं से मिलकर बनता है यदि पत्तियों में पृष्ठाश संश्लेषण द्वारा बनाये गये भाजन को पौधे के विभिन्न भागों तक पहुँचाने का कार्य करता है।

प्र० १५ पादप में जल और रसानीज लवण का बहन कैसे होता है?

प्र० पादपों में जल का रसानीज लवण का बहन जाइलम के द्वारा होता है, जड़ तने पत्तियों की जाइलम कीशकारे आपस में जुड़कर स्याजी भाग बनती है, जड़ों की कीशकारे मूँह स्पेल्सन लैटी है, जब पत्तियों में वाष्पीउत्सजन की प्रक्रिया होती है तब जल के कारण जड़ों पर एक दात उत्पन्न होता है, इस दात के उत्पन्न होने के कारण जड़ों के मूल रेख जल की अवशोषित करना शुरू करते हैं, और इस पृष्ठार रसानीज लवणी तथा जल का परिवहन होता होता है।

प्र० १६ पादप में भाजन का स्थानतरण कैसे होता है?

प्र० पत्तियों में पृष्ठाश संश्लेषण द्वारा निर्मित भाजन या बना भाजन पलोएम द्वारा पौधे के विभिन्न भागों जैसे \Rightarrow सारवाओं, पुष्टि पत्ति, बीज आदि में स्थानतरण कर दिया जाता है, यदि कार्य पलोएम में चालानी कीशकारों खं सद्यर कोशिकाओं के द्वारा सम्पन्न किया जाता है, भाजन का स्थानतरण एक साफ़िय किया है, जिसमें ऊनों का उपयोग होता है, जो ATP ऊजों के स्पर्श होता है, यदि ऊजों परासरण दात होता है, जिसके कालरवर्वर्प पादपों में भाजन का परिवहन होने लगता है।

प्र० १७.

विश्वाणु (निष्ठान) की संरचना तथा कार्य विधि का वर्णन कीजिए?

प्र० १८.

मूत्र नालिका (निष्ठोन) क्या है? इसकी संरचना एवं कार्योंका वर्णन कीजिए?

वक्त उभयी ओरा

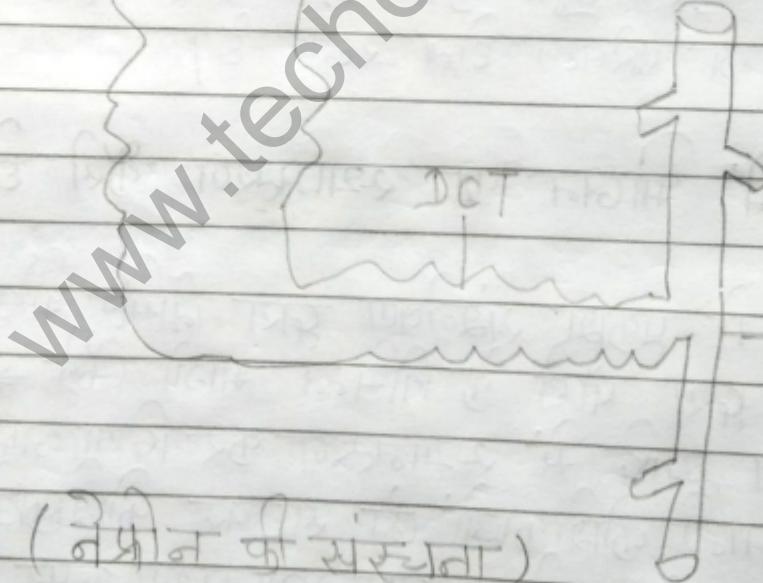
पृष्ठा द्वारा

द्वेषीन चाप्त

कोषिकार्य

PCT

(निष्ठोन की संरचना)



कार्य विधि का वर्णन \Rightarrow

1. नेप्रोन (मूत्र नलिका) \rightarrow इकाई निप्रोन कुप्तलाती है। संरचनात्मक एवं क्रियात्मक

2. बोमीन संग्रह \rightarrow निप्रोन का अपरी कुप के ग्राफुर का भाग बोमीन संग्रह कुप्तलाता है, इसके प्रब्लर कोशिका-अपो का जाल देता है।

3. श्वासी भाग \Rightarrow यह तीन भागों से मिलकर बनता है।

1. PCT \Rightarrow [PCT के आगे यह] बोमीन संग्रह के नेचि का कुंडलित भाग PCT कुप्तलाता है।

2. हेनले लुप \Rightarrow PCT के आगे यह के ग्राफुर का भाग हेनले लुप कुप्तलाता है।

3. DCT \Rightarrow हेनले लुप के आगे का कुण्डलित भाग DCT कुप्तलाता है, जो संवृद्ध नलिका में रुक्त होता है।

4. नेप्रोन के कार्य \Rightarrow (i) यह मूत्र को छानने का कार्य करता है।
(ii) यह नाइट्रोजन थ्रूप्ट उत्सर्जित पदार्थों को बाहर निकलता है।

(iii) यह रक्त दाव को नियंत्रित करता है।

(iv) यह शारीरिक साम्य उपरस्था बनारे रखता है।

(v) यह अप्स्ट्रल क्षार का संतुलन बनाए रखता है।

~~प्रश्न 18. उत्सजी उत्पाद से दृष्टकारा पाने के लिए पादप किन तीव्रायों का उपयोग करते हैं?~~

38

इस उत्पाद से दृष्टकारा पाने के लिए निम्न उपयोग करते हैं—

- (i) अनेक उत्सजी उत्पाद कीषि जाऊँ की रिक्तकुण्डों में रखिए रहते हैं, पादप कीषि जाऊँ में तुलनात्मक रूप से बड़ी रिक्तका छोटी है।
- (ii) कुछ उत्सजी पदार्थ पत्तियों में रखिए हैं, जो पत्तियों के ग्राशने के साथ दी फट जाते हैं।
- (iii) कुछ उत्सजी पदार्थ जैसे गोद, रेजिन विशेष रूप से निष्क्रय पुराने जाइलम को तरे के द्वारा बाहर निकाला जाता है।
- (iv) कुछ उत्सजी पदार्थ की जड़ों के द्वारा मृदा से बाहर निकाला जाता है।

प्रश्न 19.

मूत्र बनाने की मात्रा का नियमन किस पृकार होता है?

39

मूत्र की मात्रा जल के पुनः अवशोषण पर निष्परिकुरता है। निप्रान् द्वारा पानी की मात्रा का पुनः अवशोषण निम्न लिखित पर निष्परिकुरता है।

- (i) शरीर में पानी की किटनी मात्रा जैसको निकालना है।
- (ii) इसने घुलनशील नाइट्रोजन युक्त उत्सजकि जैसे - धूरिया, धूरिया अम्ल, आदि को उत्सजन की किया द्वारा शारीर से बाहर निकाल दिया जाता है।

प्रश्न 20.

दमारे शरीर में वसा का पाचन कैसे होता है?

40

वसा का पाचन क्षुद्रात में होता है। क्षुद्रात में वसा बड़े गोलक के रूप में उपस्थित होते हैं, जब एक द्वारा शाविक पृष्ठ इस एवं जगतावय द्वारा शाविक द्वारा अवनाशी रस क्षुद्रात में गात है।

तब पिल्ट रस के पिल्ट लवण वसा का इकलाईरण करते हैं। जिससे वसा के बड़े गोलफ छोटे भागों में फूट जाते हैं। और इस तरह छोटे गोलफों पर इनजाइम क्रिया करने लगता है। जिससे वसा व्यायाम अम्ल द्वारा लिलसरीन में परिवर्तित हो जाता है।

प्रश्न 21 भोजन के पाचन में लार की क्या भूमिका है?

लार का श्वाव मुख्य गुदा में लार व्यान्तियो हारा दीता है, इस लार में निम्न इनजाइम पाये जाते हैं, जो भोजन का पाचन करते हैं।

प्रलेय → यह भोजन को चिपचिपा बनाता है, जिससे भोजन की निर्गतने में आरामी होती है।

टायालेन → यह स्टार्च की शक्ति में बदलता है, जिससे मुख्य गुदा में अधिक चबाने से मोठा लगता है।

लार → (i) लार को साफ रखती है।
(ii) लार उच्चरण में सहायता करती है।
(iii) यह भोजन को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ने का कार्य करता है।

प्रश्न 22 वायविय तथा अवायविय श्वसन की विश्लेषणी।

अथवा

वायविय तथा अवायविय श्वसन में क्या अंतर है? कृष्ण जीवों के नाम लिखिए।

अथवा
आक्सीश्वसन एवं अवायविय श्वसन में अंतर लिखिए?

वायतिंग द्वावसाइवसन \Rightarrow यह आक्सीजन की उपरिधार में होता है।

- (i) इसके अंत में CO_2 और जल बनता है।
- (ii) इसमें 38 ATP जुड़ा बनती है।
- (iii) इसमें श्वासन का पूणि आक्सीकृत होता है।
- (iv) यह क्रिया लद्द की शाकीय जीवों में होती है।
- (v) यह क्रिया माइट्रोकॉन्ट्रूया एवं कोशिकाद्वय में होती है।
- (vi) यह क्रिया भूष्म, लीमड़ी, बकरी आदि।
- (vii) उपरोक्त \Rightarrow मनुष्य, लीमड़ी, बकरी आदि।

अवायवित्र अन्त्यांक्सीइवसन \Rightarrow

- (i) यह आक्सीजन का अनुपरिधार में होता है।
- (ii) इसके अंत में ऐश्वर्यो और CO_2 बनती है।
- (iii) इसमें 2 ATP जुड़ा बनती है।
- (iv) इसमें श्वासन का अपूणि आक्सीकृत होता है।
- (v) यह क्रिया कुछ एवं कोशिकिय जीवों में होती है।
- (vi) यह क्रिया कुवल कोशिकैय द्वय में होती है।
- (vii) उपरोक्त \Rightarrow कुलास्ट्रोडियम, ड्रेस्ट

प्रश्न 23.

दमारे शरीर में दमारलोबिन की कमी के स्थाय क्या परिणाम हो सकते हैं?

दमारे शरीर में दमारलोबिन की कमी से आक्सीजन का परिवहन घट जाता है, जिससे सांख्य कूलने लगती है। यह आक्सीजन की कमी के कारण होता है। इसके अलावा दमारलोबिन की कमी से एनोम्या रोग हो जाता है, जिससे शरीर में खून की कमी हो जाती है और व्यास्त कमज़ोर हो जाता है।

प्रश्न १५. मनुष्य में दोष्य परिवर्तन की व्याख्या कीजिए तथा वगी आवश्यक है?

प्र०

ऐसा परिवर्तन जिसमें रक्त दो बार दूध से शुजरता है। दोष्य परिवर्तन कहलाता है, यदि परिवर्तन तंत्र तीन भागों से मिलकर बनता है।

(i) सिस्टेमिक परिवर्तन \Rightarrow यदि वाये औलंद से आकर्सीजानित स्थार को वायानलय में पहुँचता है, तो वायर आकर्सीजानित स्थार में भागों में भाइमनी द्वारा शरीर में विभिन्न निलय से भागों में पांप कर दिया जाता है।

(ii) पल्मोनरी परिवर्तन \Rightarrow विआकर्सीजानित स्थार दाये औलंद से दायानलय में पहुँचता है, साथे से यह फेफड़ों में पहुँच जाता है, तथा फेफड़ों से आकर्सीजानित होकर वाये औलंद में पहुँच जाता है, तो वहाँ से सिस्टेमिक परिवर्तन द्वारा सभूत शरीर में पहुँच जाता है।

(iii) परिवर्तन की आवश्यकता \Rightarrow इस परिवर्तन में आकर्सीजानित तथा विआकर्सीजानित स्थार आपस में मिल नहीं पाते हैं, जिससे आकर्सीजानित का परिवर्तन आसानी से हो जाता है।

प्रश्न १५. जाइलम तथा फ्लोएम में पदार्थों के बहन में क्या अंतर है?

प्रश्ना

जाइलम तथा फ्लोएम की विशेषताएं लिखें।

- जाइलम → (i) इसके दूरा जल का परिवहन होता है।
 (ii) यह जड़ी में पाया जाता है।
 (iii) इसमें मृत कोशिकाएं पायी जाती हैं।
 (iv) इसमें झज्जी की आवश्यकता नहीं होती है।
 (v) यह स्वाधन पुल के केन्द्र में स्थिर होता है।

- फलीएम → (i) इसके दूरा भीजन का परिवहन होता है।
 (ii) यह पत्तियों में पाया जाता है।
 (iii) इसमें जीवित कोशिकाएं पायी जाती हैं।
 (iv) इसमें झज्जी की आवश्यकता नहीं होती है।
 (v) यह स्वाधन पुल के बाहरी स्थिर पर स्थिर होता है।

प्रश्न 26. फुफ्फुस में कूपिकाशी की उत्था विक्षण नियान की स्थन क्रियावेदी की तुलना कीजिए।

- कूपिकाशी → (i) यह के कफड़ी की क्रियात्मक ईकाई है।
 (ii) इसके दूरा गर्सीय आजन-पूदान जी क्रिया होती है।
 (iii) यह फूली छुट्टि गुण्डारे के समान होती है।
 (iv) यह केफड़ी में पायी जाती है।
 (v) यह केफड़ी में ग्राण्डी के समान में होती है।

- विक्षण → (i) यह दृक्कु ल की क्रियात्मक ईकाई है।
 (ii) इसके दूरा सूत्र को छाना जाता है।
 (iii) यह कूपिकाशी के समान होती है।
 (iv) यह कूपिकाशी में पायी जाती है।
 (v) यह विक्षण में कम सरख्या में होती है।

प्र० 27. रक्त और लासेका में अंतर स्पष्ट कीजिए।

रक्त	लासेका
1. यह लाल रंग का होता है।	1. यह रंग दिन होता है।
2. इसमें दीमोर्गोबिन पाया जाता है।	2. इसमें दीमोर्गोबिन नहीं पाया जाता है।
3. इसमें O_2 पायी जाती है।	3. इसमें O_2 नहीं पायी जाती है।
4. इसमें CO_2 कुम मात्रा में होती है।	4. इसमें CO_2 अधिक मात्रा में पायी जाती है।
5. इसमें प्रौद्योगिक मात्रा में होती है।	5. इसमें प्रौद्योगिक कुम मात्रा में पायी जाती है।
6. इसमें अपरस्ट कुम मात्रा में होती है।	6. इसमें अपरस्ट अधिक मात्रा में होती है।

प्र० 28. मनुष्य की दृश्य की संरचना का सांकेत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 29

धमनी और शिरा में अंतर लिखिए।

धमनी और शिरा की विशेषताएं लिखिए।

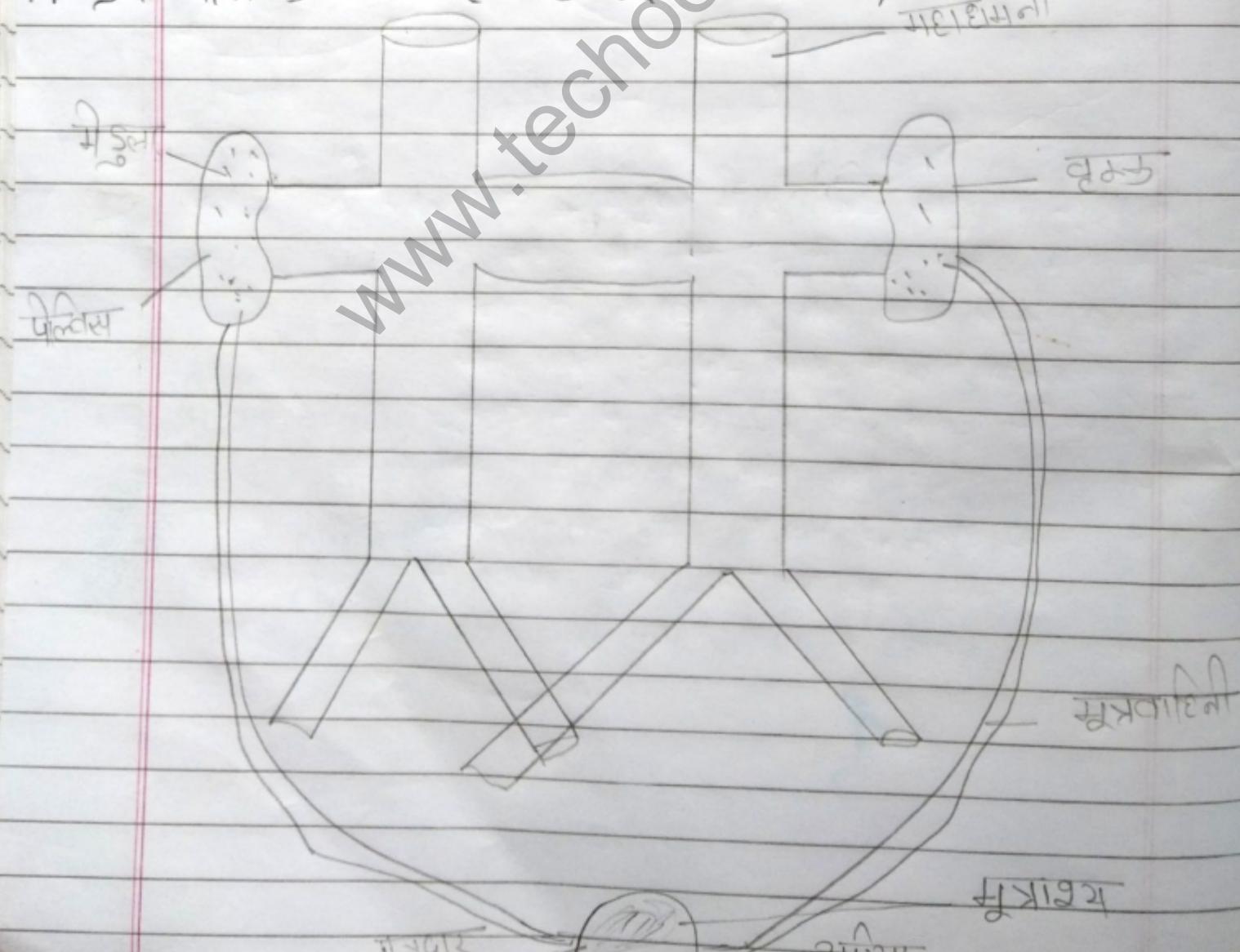
धमनी

१. यह लाल रंग की होती है।
२. यह रक्त को दूष्य से अग्रा में ले जाती है।
३. इसमें रक्त प्राणिक दाव के साथ बहता है।
४. इसमें कुपाट नहीं पाये जाते हैं।
५. यह तंक्यू के अन्दर होती है।
६. इसकी दीवार मोटी होती है।

शिरा

१. यह हड्डेके नीले रंग की होती है।
२. यह रक्त को अंगों से दूष्य में ले जाती है।
३. इसमें रक्त फ्रम दाव के साथ बहता है।
४. इसमें कुपाट पाये जाते हैं।
५. यह तंक्यू की ऊपरी स्फट पर होती है।
६. इसकी दीवार पतली होती है।

प्रश्न 30. मानस के उत्सर्जनी तंत्र का सख्तोंप्रणाली कीजिए।



पूर्ण \Rightarrow मनुष्य में एक जोड़ी सेम के बीज के आकार के तृप्ति पाये जाते हैं। जो इस गुदा में स्थित होते हैं।

मूत्रवाहिनी \Rightarrow तृप्ति के पिण्डस से एक जोड़ी नलिका की संरचना है निफलता है, जिन्हें मूत्र वाहनी कहते हैं।

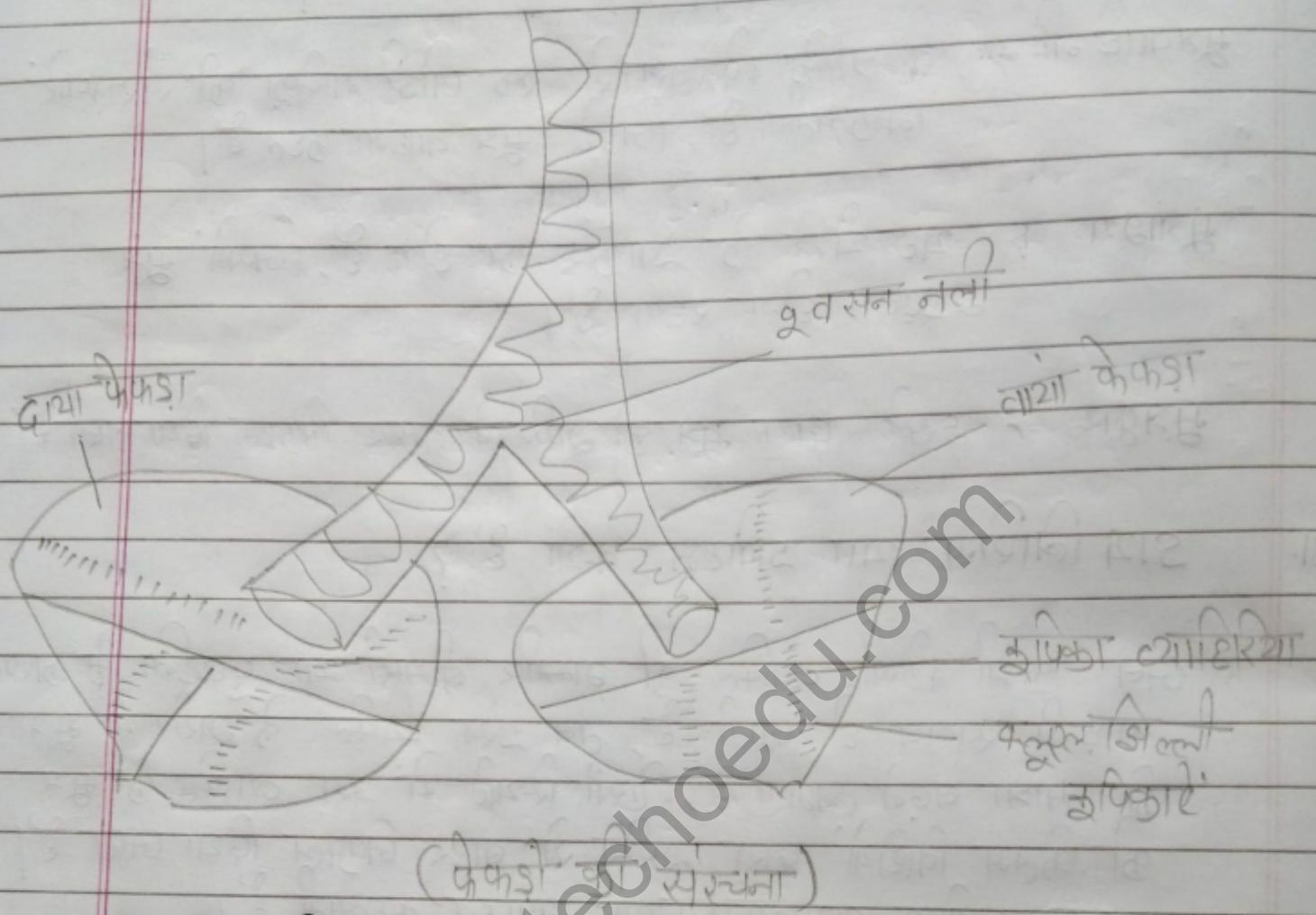
मूत्राशय \Rightarrow यह थैले के आकार का होता है, जिसमें मूत्र इकट्ठा होता रहता है।

मूत्रधार \Rightarrow इसके द्वारा मूत्र को शरीर से बाहर निकाल दिया जाता है।

प्रश्न 31. डायलिसिस या ग्रोटन क्या है?

उत्तर \Rightarrow जब कुछ फिसी व्यक्ति की ग्रन्थी लीमारी या पुधटना के कारण किनी रक्तांश हो जाती है तब उस व्यक्ति के शरीर में मूत्र की मात्रा बढ़ने लगती है, ऐसी रिक्ती में उस व्यक्ति के मूत्र को क्रिएटम विधि द्वारा शरीर से बाहर निकाल दिया जाता है। यह पूर्विया डायालिसिस या ग्रोटन कहलाती है।

प्रश्न 32. मनुष्य के श्वसन तंत्र या केफड़ो की संरचना का सांकेतिक वर्णन कीजिए।



फेफड़ी की संरचना → मनुष्य में एक जोड़ी शंकु के अस्त्रार के फेफड़े पाये जाते हैं, जो वक्षीय शुद्धा में संरचना दीटे हैं। फेफड़ी के चारों तरफ फूलखल इल्ली पायी जाती है, दाढ़ी केफड़े में तीन पिंड तथा वाये केफड़े में दो पिंड दीटे हैं, फेफड़ी में कुरोड़ी की संरचना में शूपिकाएँ पायी जाती हैं, जिनमे ग्रेसीय आदान-प्रदान की क्रिया दीटी है, इसके अलगवा केफड़ों में दामनी और छिरा का जाल कैला रहता है।

प्र० १३. मनुष्य के पाचन तंत्र का साक्षिप्त वर्णन कीजिए।



मनुष्य के पाचन तंत्र में निम्न भाग पाये जाते हैं।

मुख गुदा \rightarrow मनुष्य का मुख अदर की तरफ छगुदा के स्पर्श में स्फुलता है। जिसे मुख गुदा कहते हैं। मुख गुदा में दात, जीभ, लार व्हान्य आदि पायी जाती है।

वृत्सनी \rightarrow मुख गुदा के ऊपरी कोण के आकार का माग वृत्सनी कहलाता है।

वृसिका \rightarrow वृत्सनी के ऊपरी नालिकार का माग वृसिका कहलाता है।

आमाशय \rightarrow द्वायक के नीचे थेले के ग्राफर की संरचना होती है, जिसे आमाशय कहते हैं, यह तीन भागों से मिलकर बनता है।

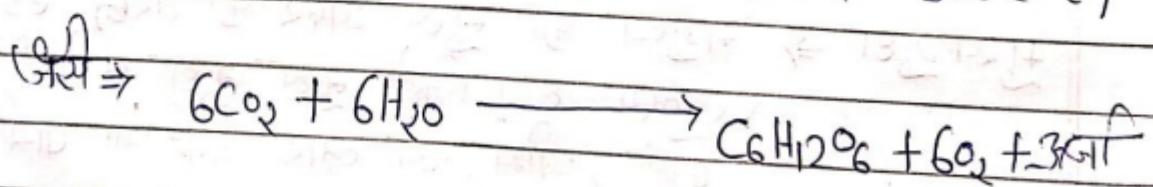
(i) फाइपिंक (ii) कार्डिट (iii) पाचलोरिक

द्वायी आंत \rightarrow यह लगभग 6.5 m लम्बी कृष्णांवलत नलिकार संरचना होती है। जिसमें भोजन का पुणि पाचन एवं अवशोषण होता है।

बड़ी आंत \rightarrow यह लगभग 1.5 m लम्बी नलिकार संरचना होती है। जिसके द्वारा अपनायी भोजन की शरीर से बाहर निकाल दिया जाता है।

प्रश्न ३५. प्रकाश संश्लेषण किसे कहते हैं? समीकरण सादृश समझाइए।
उत्तर। प्रकाश संश्लेषण क्या है? इसके प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।

प्रकाश संश्लेषण \rightarrow दूर पीछे सूर्य के प्रकाश का पर्याप्ति की उपर्याति में CO_2 और H_2O से क्रिया फरके गूढ़ कीज बनाते हैं, तथा आक्सीजन मुक्त करके यह क्रिया प्रकाश संश्लेषण कहलाती है।



कारक \rightarrow

$CO_2 \Rightarrow CO_2$ की अल्प मात्रा बढ़ने पर प्रकाश संश्लेषण की क्रिया तीव्र हो जाती तथा अधिक मात्रा बढ़ने पर प्रकाश संश्लेषण की क्रिया हीमी हो जाती है।

$H_2O \rightarrow$ जल पृकाश संश्लेषण को पृथिवी से प्रभावित करता है।
इसका कुमारी होने पर पृकाश संश्लेषण की क्रिया दीमी हो जाती है।

सूख का प्रकाश \rightarrow कम पृकाश में पृकाश की क्रिया दीमी तथा अधिक
पृकाश में पृकाश संश्लेषण की क्रिया तीव्र हो जाती है।

पर्णदरम \rightarrow पानी में परिणाम की मात्रा अधिक होने पर पृकाश संश्लेषण की क्रिया तीव्र हो जाती है।

ताप \rightarrow सामान्यतः $10^{\circ}C$ स्त्रीर $25^{\circ}C$ ताप पर पृकाश संश्लेषण की क्रिया तीव्र हो जाती है।

प्रौज्ञक: लसिका क्या है? इसके कार्य सिखिए?

लसिका \rightarrow जल रक्त दमनिया से होकर बढ़ता है, तो कुछ रक्त दमनिया के द्वारा से ग्रस्त होकर कोशकाज्ञों के अदर कोशकाज्ञों में मर जाता है, जिसे लसिका कहते हैं।

लसिका के कार्य \rightarrow

- (i) यदि धाव भरने में रक्ताभुक करती है।
- (ii) यदि लिंगोसाइट का निमिण करता है।
- (iii) यदि जीवाणुओं को नष्ट करता है।
- (iv) लसिका वाद काज्ञों पूरा वर्ग का अवशोषण करती है।
- (v) लाज्जा प्रोटीन को स्तं भेलाती है।

प्रश्न ३६.

थकूट के कार्य लिखिए।

- (i) यह वित्त रस का स्रोत होता है।
- (ii) यह वसा का संचयन करता है।
- (iii) यह अमोनिया को ग्लूरया में लात्ता है।
- (iv) गुलुकोज प्लाटिक दोनों पर यह उत्सर्जन में लाभ होता है।
- (v) इरीर में गुलुकोज की कमी दोनों पर यह उत्पादन में लाभ होता है।

संधि विषय चुनकर लिखिए -

(i) प्रकाश संश्लेषण है ।

जैव रसायनिक क्रिया

(ii) प्रकाश संश्लेषण की क्रिया पौधे के किसी भाग में होती है ?

पातियों में

(iii) मधलियों में इवसन होता है ।

गलफड़

(iv) मनुष्य के दृश्य में कितने कुछ होते हैं ।

4

(v) काँकरेच के दृश्य में कितने कुछ होते हैं ।

13

(vi) घुरिया का निमाण होता है ।

घुरिया

(vii) वृक्ष के संरचनात्मक एवं क्रियात्मक इकाई है ।

निपोन

(viii) अबृत में उपरिथर इवसन वर्धिक का नाम बताओ ।

दीमी ग्लोबिन

(ix) रक्त का PH मान होता है ।

7.3

(x) शुष्क जल का PH मान होता है ।

7

- (xi) स्वदाता रक्त समूद्र है।
⇒ ०
- (xii) सर्वधृष्टि रक्त समूद्र है।
⇒ AB
- (xiii) वे सभी पृक्रम जो सम्मिलन रूप से अनुरक्षण का कार्य करते हैं
जैसे कृदलाते हैं? ⇒ जैव पृक्रम
- (xiv) पीछे में जल का परिवहन दीरा है।
⇒ जाइलम
- (xv) लार में झन्जठम पाये जाते हैं।
⇒ टाइलिन
- (xvi) मनुष्य के आमाशय में कौन सा अम्ल पाया जाता है?
⇒ HCl
- (xvii) मानव शरीर की सबसे बड़ी पाचन वृद्धि है।
⇒ दृष्टि
- (xviii) मनुष्य में वृक्ष के तंत्र का भाग है, वह है,
उत्सर्जन तंत्र
- (xix) पीछे में पाये जाने वाले दर विक्रि का नाम क्या है?
⇒ परिदृश्यम्
- (xx) इवस्थ व्यक्ति का रक्त दाव कितना दीरा है?
⇒ 120 / 80 mmHg
- (xxi) केचुआ का इवस्थ अगले जरूरत
त्वचा

(xxii)

शुल्क

कृषि का शुल्कन नियंत्रण है।
शुल्कन नालिका

(xxiii)

शुल्क

प्रामाण्य भीजन का प्रभावीय माइक्रो क्षेत्राता है।
प्राइम

<https://parikshasolutions.blogspot.com>

www.echoedu.com